देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का सातवाँ हुक्म, इशा-ए-रब्बानी।

हज़रत ईसा अल-मसीह का सातवाँ हुक्म, इशा-ए-रब्बानी।

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकारों के लिए एक बहुत अहम फर्ज़ है। पाक गुस्ल और इशा-ए-रब्बानी — ये दो फराइज़ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें दियें, ताकि हम खुशखबरी को अपनी ज़िंदगी में सही तरह लागू कर सकें। आज की तालीम *लूका 22:7–20* से है।

सबक शुरू करने से पहले, मैं *ईद-ए-फ़सह* नाम के एक त्योहार के बारे में समझाना चाहता हूँ। ये बनी-ए-इस्राईल का सालाना त्योहार था, जिसमें वो याद किया करते थे कि ख़ुदा ने हज़रत मूसा (अ.स.) के ज़रिये उन्हें मिस्र से किस तरह निकाला। उस वक़्त ख़ुदा ने एक फ़रिश्ता भेजा था जो हर घर के बड़े बेटे की जान ले लेता था। लेकिन ख़ुदा ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि एक लैला यानी दुम्बा क़ुरबान करें और उसका ख़ून अपने दरवाज़े पर लगा दें। जिस घर पर ख़ून लगा होता, फ़रिश्ता उस घर को फ़सह करता, यानी उसे छोड़कर आगे बढ़ जाता।— इसीलिए इसे *ईद-ए-फ़सह* कहा जाता है। आज के वाकिये में भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह और उनके शागिर्द ईद-ए-फ़सह मना रहे थे।

लूका 22:7–20 का बयान

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले को क़ुरबान करना था।

8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जाकर उसे खा सकें।”

9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”

10 उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिसमें वह जाएगा।

11वहाँ के मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’

12वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”

13दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

14मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया।

15उसने उनसे कहा, “मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ।

16क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।”

17फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, “इसको लेकर आपस में बाँट लो।

18मैं तुमको बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने पर पियूँगा।”

www.taleemulkalam.org

19फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने कहा, "यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।"

20इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है, वह ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

इस ईद-ए-फ़सह के खाने में, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने रोटी ली और तोड़ कर कहा कि ये मेरा बदन है — जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है। मेरी याद में ऐसा ही किया करो। फिर प्याला लिया और कहा कि यह मेरे ख़ून में एक नया अहद है — जो तुम्हारे गुनाहों की माफी के लिए बहाया गया है। मेरी याद में ऐसा ही किया करो। इसलिए आज हम इस अमल को "इशा-ए-रब्बानी" कहते हैं,

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि **रोटी** उनके **बदन** की नुमाइंदगी करती है, जो हमारे लिए तोड़ा गया। उन्होंने कहा कि **मै यानी शरबत का प्याला** उनके उस ख़ून की नुमाइंदगी करता है, जो हमारे लिए बहाया गया। इसलिए इशा-ए-**रब्बानी** एक ऐसा वक़्त है जब हम याद करते हैं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए **सलीब** पर अपनी जान दे दी। सलीब पर उनका बदन तोड़ा गया। सलीब पर उनका ख़ून बहाया गया। इसी काम के ज़रिए ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों को माफ़ किया और हमें ख़ुदा के सामने रास्त और कबूल किया हुआ बना दिया।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उस वक़्त के बारे में बात की जब **ख़ुदा की बादशाहत** पूरी तरह ज़ाहिर होगी। उसने उनसे कहा, "मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।" ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह जानते थे कि वह बहुत जल्द **सलीब** पर क़ुरबान किये जायेंगे और शागिर्दो से जुदा कर दिए जाएँगे। वह यह भी जानते थे कि एक दिन आने वाला है जब उनकी बादशाहत पूरी **क़ुदरत** के साथ क़ायम होगी। जिस दिन की वह बात कर रहे थे, वह **हिसाब का दिन यानी कयामत का दिन** है, जब ख़ुदा की बादशाहत पूरी तरह आ जाएगी। अगर हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकार हैं, तो हिसाब के दिन की यह हक़ीक़त हमें बहुत बड़ा सुकून देती है। सलीब पर उनकी कुरबानी के ज़रिए हमारे गुनाह माफ़ हो चुके हैं। इसलिए हम हिसाब के दिन का इंतज़ार पूरे ईमान के साथ कर सकते हैं। हमारे लिए हिसाब का दिन डर का दिन नहीं, बल्कि **बड़ी खुशी और जश्न** का दिन होगा। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह इस दुनिया की सारी बुराइयों को मिटा देंगे, और हम हमेशा-हमेशा के लिए **ख़ुदा के साथ** होंगे।

इस हिस्से में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने अपने ही **मौत** के बारे में भी नबूवत की, ताकि हमारे गुनाहों की माफ़ी हो सके। उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी अपनी जान दे दी, ताकि हम **ख़ुदा के सामने रास्त** ठहरें। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की **क़ुर्बानी की मौत** को याद करने के लिए, उनके पैरोकारों के इकट्ठा होने में **इशा-ए-रब्बानी** बाक़ायदा ली जाती है। हम इस इकट्ठा होने को **जमाअत** कहते हैं। हमारा फर्ज़ यह है कि ये जमाअतें कम-से-कम हफ़्ते में एक बार ज़रूर मिलें, आम तौर पर किसी घर में। मसलन, कोई जमाअत **जुमे की दोपहर** या **इतवार की सुबह** इकट्ठा हो सकती है। जब जमाअतें जमा होती हैं, तो वे **दुआ** करती हैं, **इबादती गीत** गाती हैं, **इंजील शरीफ़** पढ़ती हैं, और **इशा-ए-रब्बानी** में शरीक होती हैं। किसी जमाअत का रुक्न बनने के लिए ज़रूरी है कि आदमी पहले अपने **गुनाहों से तौबा** करे और फिर **पाक गुस्ल** ले।

इशा-ए-रब्बानी लेने से पहले, जमाअत **तौबा** और **दुआ** के लिए वक़्त लेती है। इशा-ए-रब्बानी लेना हमें यह मौक़ा देता है कि हम अपनी ज़िंदगी को फिर से **ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की सलीब** के पास ले आएँ, ताकि रहमत और फ़ज़ल हासिल कर सकें।

www.taleemulkalam.org

तौबा के बाद, कोई शख़्स **रोटी** लेता है, उसे तोड़ता है, और हमें यह याद दिलाता है:

जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो। (1 कुरिन्थियों 11:23–24) इसके बाद, हर वह शख़्स जिसने **बपतिस्मा** लिया होता है, रोटी का एक टुकड़ा लेता है, और जमाअत **दुआ** के साथ मिलकर उसे खाती है।

इसके बाद कोई शख़्स मै यानी **शर्बत का प्याला** लेता है और कहता है:

इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।" 26क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए। (1 कुरिन्थियों 11:25–26) फिर वह प्याला आगे बढ़ाया जाता है, और हर वह शख़्स जिसने **पाक गुस्ल** लिया होता है, उसमें से पीता है। आख़िर में सब मिलकर **दुआ** करते हैं और एक **इबादती गीत** गाते हैं।

इस अमल में शरीक होने के लिए ज़रूरी है कि आदमी पहले अपने **गुनाहों से तौबा** करे, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान लाये, और **पाक गुस्ल** ले। इसके बाद उसे चाहिए कि अपने क़रीब रहने वाले ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दूसरे पैरोकारों के साथ, कम-से-कम हफ़्ते में एक बार, **जमाअत** में इकट्ठा होना शुरू करे। जमाअत के तौर पर हम बाक़ायदा मिलकर इशा-ए-**रब्बानी** लेते हैं। इशा-ए-रब्बानी लेने के बाद हर शख़्स अपने ईमान में **नया सुकून और ताज़गी** महसूस करता है।

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की **मौत की याद** का एक निशान है। यह उन सब लोगों के लिए भी एक **तस्वीर और गवाही** है जो ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में सीखने के लिए आपकी **जमाअत** में आते हैं।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....